idara

नमाज़ की पाबन्दी और उसकी हिफ़ाज़त

मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान आज़मी

नमाज़ की पाबन्दी और उसकी हिफ़ाज़त

मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान आज़मी

www.idaraimpex.com

पुस्तक का नाम :

नमाज़ की पाबन्दी और उसकी हिफ़ाज़त

लेखक

मैलाना फ़ज़लुर्रहमान आज़मी

अनुवादक

अहमद नदीम नदवी

Namaaz Ki Pabandi aur Uski Hifazat

प्रकाशन : 2013

ISBN 81-7101-488-7

TP-180-13

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: 2695 6832 Fax: +91-11-6617 3545
Email: **sales@idaraimpex.com**
Visit us at: **www.idarastore.com**

Designed & Printed in India

Typesetted at: **DTP Division**
IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT
P.O. Box 9795, Jamia Nagar, New Delhi-110025 (India)

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नमाज़ की पाबन्दी और उसकी हिफ़ाज़त

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यिदिल अंबियाइ वल मुर्सलीन मुहम्मदिंव-व आलिही व अस्हाबिही अजमईन व मन तबिअहुम बिएहसानिन इला यौमिद्दीन०

नमाज़ इस्लाम मज़हब की सबसे अहम इबादत है। ईमान के बाद इस्लाम की बुनियाद का जो स्तून सबसे पहले मज़बूती से तैयार किया गया, वह नमाज़ है और महशर में सबसे पहले जिस अमल का हिसाब लिया जाएगा वह भी नमाज़ है। मेराज के वाक़िए में बेमिसाल बुलन्दी और शान के साथ जो इस्लाम का रुक्न अता हुआ वह नमाज़ है, और बालिग़ होने से लेकर मौत तक, सफ़र व हज़र, मरज़ व सेहत और लड़ाई और अम्न, हर हाल में जिस अमल का पांच वक़्त करना लाज़िम क़रार पाया, वह नमाज़ है। कुफ़्र व इस्लाम में फ़र्क़ करने वाली चीज़ भी नमाज़ है और आप ﷺ की आंखों की ठंडक भी नमाज़ है। नमाज़ ईमान की पक्की सनद भी है और जिन्न और इंसान की ज़िंदगी का मक़सद भी, अल्लाह की इबादत के अदा करने की मुकम्मल और जामे शक्ल भी, नमाज़ सबसे ज़्यादा अल्लाह का क़ुर्ब हासिल कराने वाला अमल भी है और मोमिन की मेराज भी, नमाज़ अल्लाह के ज़िक्र का नाम है और सब्र और साबितक़दमी की तस्वीर भी है। मुख़्तसर यह कि क़ुरआन व सुन्नत में नमाज़ के बारे में अनगिनत फ़ज़ीलतें, बेशुमार नसीहतें, लामहदूद फ़ायदे और अहम मसले आए हुए हैं।

नमाज़ की ऊपर ज़िक्र की गई बरकतों और दीनी और दुन्यवी फ़ायदों को

हासिल करने के लिए ज़रूरी है कि उसको उसी तरीक़े से अदा किया जाए, जिस तरीक़े से जिब्रील अमीन ﷺ ने आप ﷺ को पढ़ाई और फिर उम्र भर आप ﷺ ने उम्मत को 'सल्लू कमा रऐतुमूनी उसल्ली' (नमाज़ अदा करो जैसा कि तुमने मुझे अदा करते देखा है) के ज़रिए सिखाई।

नमाज़ के एहतिमाम के बारे में क़ुरआन करीम ने जो ग़ैर मामूली ताकीद फ़रमाई है, उसका अन्दाज़ा क़ुरआन करीम की 'नमाज़ क़ायम करो' की ताबीर से होता है जो क़ुरआन में जगह-जगह नमाज़ के लिए इस्तेमाल हुई है और 'इक़ामते सलात' (नमाज़ क़ायम करना) हक़ीक़त में दिल लगाकर और गिड़गिड़ा कर नमाज़ को अदा करने का नाम है और नमाज़ में यह गिड़गिड़ाहट उस वक़्त पैदा होती है, जबकि नमाज़ के हर-हर रुक्न को इस तरह अदा किया जाए, जिस तरह इस्लामी शरीअत ने उसको अदा करने की तलक़ीन व ताकीद की है। नमाज़ के इसी एहतमाम को आप ﷺ ने कभी इस तरह समझाया कि नमाज़ को इस तरह पढ़ो गोया यह तुम्हारी आखिरी नमाज़ है और कभी यह फ़रमाया कि नमाज़ इस तरह पढ़ो गोया तुम अल्लाह को देख रहे हो और अगर तुम अल्लाह को नहीं देख रहे हो तो वह तो तुम्हें देख ही रहा है।

नमाज़ के एहतिमाम की इस ग़ैर मामूली अहमियत ही का नतीजा है कि आप ﷺ ने पूरी नमाज़ के लिए अल्लाह तआला से खुसूसी दुआ फ़रमाई और अपनी दुआओं में आप ﷺ ने इस दुआ का भी एहतिमाम फ़रमाया—

'अल्लाहुम-म इन्नी असअलु-क तमामल वुज़ूए व तमामस-सलाति व तमा-म रिज़्वानि-क व तमा-म मग्फ़िरतिक'

(ऐ अल्लाह! मैं तुझसे मांगता हूं पूरा-पूरा वुज़ू करना और पूरी-पूरी नमाज़ अदा करना और पूरी-पूरी तेरी रज़ामन्दी और पूरी-पूरी तेरी बख़्शिश।')

हर मोमिन मर्द और औरत पर कामियाब ज़िंदगी जीने और आख़िरत में कामरान व बामुराद होने के लिए ज़रूरी है कि अपनी नमाज़ों की इस्लाह की हर वक़्त फ़िक्र करें और इस अहम इबादत को ऐसे ही अदा करने की कोशिश करें, जैसे कि हुज़ूरे अक़्दस ﷺ हमको सिखा गए, ताकि हर कोई ज़िंदगी के अक्सर वक़्तों में अदा की जाने वाली इस इबादत को दीनी, दुन्यवी, ज़ाहिरी और बातिनी मुनाफ़े हासिल करने का ज़रिया बन सके और अल्लाह तआला की रिज़ा व खुश्नूदी के ज़रिए दोनों दुनिया में सुर्ख़रू हो जाए।

यह किताब नमाज़ जैसे मुबारक उन्वान और उसकी इस्लाह व इत्माम के शानदार मक़्सद को सामने रख कर लिखी गई है और अलहम्दुलिल्लाह यह उन्वान दरिया को कूज़े में बन्द करने जैसा है। किताब के लेखक हज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान आज़मी साहब दामत बरकातुहू नाचीज़ के उस्ताद के बेटे हैं। हज़रत मौलान जामिया इस्लामिया डाभेल में हदीस के उस्ताद थे और अपनी खुदादाद सलाहियत व क़ाबिलियत की बुनियाद पर माशाअल्लाह डाभेल के क़ियाम के ज़माने में अवाम व ख़वास में मक़्बूल और मर्जा (जिसकी तरफ़ रुजूअ किया जाए) की हैसियत रखते थे। जामिया डाभेल में भारी इल्मी ख़िदमतें अंजाम देकर फ़िलहाल दारुल उलूम आज़ादोल, साउथ अफ़्रीक़ा के शेख़ुल हदीस हैं। हज़रत मौलाना जामिया आज़ादोल में हदीस शरीफ़ के पढ़ाने के साथ-साथ इस्लाह व तब्लीग़ का भी क़ाबिले क़द्र काम कर रहे हैं, बल्कि अगर कहा जाए कि मौलाना ने अपनी इस किताब में भी दावत व तब्लीग़ का काम करने वाले लोगों की बुनियादी ज़रूरत का ख़्याल रख कर ही नमाज़ के मसलों को जमा फ़रमाया है, तो बजा है। किताब को ग़ौर से पढ़ने वाला इस बात को अच्छी तरह महसूस करेगा। हज़रत मौलाना मोहतरम हकीम अख़्तर साहब दामत बरकातुहू के ख़लीफ़ा हैं और इस्लाह व इर्शाद की अहम ख़िदमतों की वजह से एक बड़े इलाक़े के मरजा (जिसकी तरफ़ रुजूअ किया जाए) की हैसियत रखते हैं और अफ़्रीक़ा के ग़ैर इलाक़े में भी बड़ों के उस इस्लाही चिराग़ को मुनव्वर किए हुए हैं। अल्लाह तआला मौलाना की मिल्लते इस्लामिया की इन इल्मी, इस्लाही, दावती और तर्बियती ख़िदमतों को क़ुबूल फ़रमाए और हर ख़िदमत को दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी अता फ़रमाए। आमीन

जामिया उलूम जम्बूसर के हदीस के उस्ताद मौलाना मुहम्मद देवलवी साहब ज़ी-द मज्दुहू की मुलाक़ात उनके एक सफ़र के दौरान हज़रत मौलाना फ़ज़लुर्रमान आज़मी दामत बरकातुहू से हुई। मौलाना साहब ने हज़रत मौलाना फ़ज़लुर्रहमान साहब दामत बरकातुहू की उनके अपने इदारे (इदारा एहयाए सुन्नत, आज़ादोल, 1350, साउथ अफ़्रीक़ा) के एहतमाम में शाया होनेवाली अहम किताबों को देखकर इस किताब को जामिया उलूमुल क़ुरआन के शोबा नश्र व इशाअत से शया कराने की दरख़्वास्त की। हज़रत ने इस दरख़्वास्त को ख़ुशी से क़ुबूल करके मुहब्बत के साथ अपनी तरफ़ से शाया कराने की पेशकश की। हम हज़रत मौलाना के दिल की गहराइयों से शुक्रगुज़ार हैं कि हज़रत ने अपनी इस क़ीमती

और मुफ़ीद किताब को जामिया के शोबा-ए-नश्र व इशाअत के एहतिमाम में शाया करने का मौक़ा फ़राहम फ़रमाया। अल्लाह तआला मौलाना मोहतरम का उसका शायाने शान बदला इनायत फ़रमाए और हज़रत के इस इल्मी फ़ैज़ और सदक़ा-ए-जारिया को क़ुबूल फ़रमाए। आमीन

आख़िर में जामिया उलूमुल क़ुरआन के मुताल्लिक़ लोगों और हलक़ा-ए-अहबाब की ख़िदमत में यह क़ीमती हदिया पेश करते हुए गुज़ारिश करता हू कि जामिया के शोबा-ए-नश्र व इशाअत के ज़रिए दीनी व इल्मी किताबें शाया करवा कर अपने मरहूम लोंगों के लिए ईसाले सवाब और सदक़ा-ए-जारिया का एहतमाम फ़रमाएं और इस मोहतम्म बिश्शान शोबे की ख़िदमतों को वसीअ से वसीअतर बनाने में अपना तआउन पेश फ़रमाएं।

फ़क़्त वस्सलाम

(हज़रत मौलाना मुफ़्ती) अहमद देवलवी (साहब)

मोहतमिम जामिया उलूमुल क़ुरआन, जम्बूसर,

ज़िला भड़ोंच, गुजरात (अल-हिन्द)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम व अला आलिही व अस्हाबिही इज्मईन

मुसलमान मर्द और औरत के लिए एक अहम किताब

इस हक़ीक़त को कोई आम मुसलमान भी ऐसा न होगा जो न जानता हो कि ईमान और अक़ीदों के बाद इस्लामी अरकान और इस्लामी हुक्मों में नमाज़ सबसे अहम और सबसे बुलन्द अमल है। हज़रत रसूलुल्लाह ﷺ ने इस्लाम की तफ़्सील बयान करते हुए आमाल में सबसे पहले नमाज़ का ज़िक्र फ़रमाया है और हज़रात सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को दीन की तब्लीग़ और इस्लाम की दावत का तरीक़ा बताते हुए ईमानियात के बाद इस्लाम के आमाल में सबसे पहले नमाज़ की दावत देने के लिए फ़रमाया है। क़ुरआन व सुन्नत से नमाज़ की बहुत सी फ़ज़ीलतें साबित हैं–

नमाज़ इस्लाम का बुनियादी फ़रीज़ा है,

नमाज़ मुसलमान होने की निशानी है,

नमाज़ मुसलमान और काफ़िर के दर्मियान पहचान अलग कर देने वाली एक हद है,

नमाज़ हज़रत रसूलुल्लाह ﷺ की आंखों की ठंडक है,

नमाज़ अल्लाह की मदद हासिल करने का ज़रिया है,

नमाज़ जन्नत हासिल करने का रास्ता है,

नमाज़ जहन्नम से निजात का ज़रिया है,

नमाज़ जान व माल की हिफ़ाज़त की ज़मानत देने वाली है,

नमाज़ आख़िरत में रोशनी का मीनार है,

नमाज़ दिन-रात में पांच बार अपने गुनाहों से पाक होने का ग़ुस्ल है,

नमाज़ बेहयाई के कामों और बुरी बातों से रोकने वाली है,

नमाज़ अल्लाह का क़ुर्ब हासिल करने का सबसे आला अमल है,

नमाज़ शबे मेराज का क़ीमती तोहफ़ा है,

नमाज़ ईमान वालों की मेराज है।

ऊपर लिखी तफ़्सील के मुताबिक़ नमाज़ बहुत ही अहम व अफ़ज़ल इबादत और बहुत बुलन्द मर्तबा अमल है, इसलिए बहुत एहतमाम से पाबन्दी के साथ इस अमल को अदा करना चाहिए और हज़रत रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ का जो सही और मस्नून तरीक़ा उम्मत को बताया है, उसके मुताबिक़ उसको सेहत व सुन्नत की पूरी रियायत के साथ अदा करना चाहिए और आख़िरत में क़ियामत के दिन भी सारी इबादतों और अल्लाह तआला के हुक्मों में सबसे पहले नमाज़ को पाबन्दी से अदा करने और उसको सही व सुन्नत के तरीक़े के मुताबिक़ अदा करने के मुताल्लिक़ हिसाब लिया जाएगा।

عن حريث بن قبيصةؓ قال قدمت المدينة فقلت اللهم يسرلی جليسا صالحا قال فجلست الى ابی هريرةؓ فقلت انی سئلت الله ان يرزقنی جليسا صالحا فحدثنی بحديث سمعته من رسول الله ﷺ لعل الله ان ينفعنی به فقال سمعت رسول الله ﷺ يقول ان اول ما يحاسب به العبد يوم القيامة من عمله صلوته فان صلحت فقد افلح وانجح و ان فسدت فقد خاب و خسر فان انتقص من فريضة شيئا قال الرب تبارك و تعالىٰ انظروا هل لعبدی من تطوع فيكمل بها ما انتقص من الفريضة ثم يكون سائر عمله علی ذلك۔

(ترمذی شريف جلد١، صفحه ٩٤)

तर्जुमा—हज़रत हुरैस बिन क़ुबैसा रज़ि० ने बयान किया कि मैं मदीना मुनव्वरा पहुंचा और मैंने यह दुआ की कि ऐ अल्लाह! तू मुझे एक नेक हमनशीं और साथी मयस्सर फ़रमा दे। फिर मैं हज़रत अबूहुरैरह ﷺ के पास पहुंचा और मैंने उनसे कहा कि मैंने तो अल्लाह तआला से यह दुआ की है कि मुझे एक नेक साथी अता फ़रमा, इसलिए आप मुझे कोई ऐसी हदीस सुनाइए जो आपने हज़रत रसूलुल्लाह ﷺ से सुनी हो और अल्लाह तआला की ज़ाते आली से मुझे उम्मीद है कि इस हदीस को मेरे लिए नफ़ा बख़्श बनाएंगे। हज़रत अबू हुरैरह ﷺ ने कहा कि मैंने हज़रत रसूलुल्लाह को फ़रमाते हुए सुना है कि क़ियामत के दिन बन्दे के आमाल में से सबसे पहले उसकी नमाज़ का हिसाब किया जाएगा। अगर उसकी नमाज़ सही और दुरुस्त साबित हुई तो वह आदमी (अपने मक़्सद में कामियाब होगा और अगर उसकी नमाज़ (छोड़ने की वजह से या सही तरीक़े से न पढ़ने की वजह से) ख़राब और नाक़िस साबित हुई, तो वह शख़्स (सवाब से) महरूम और (अक़ाब और अज़ाब की वजह से)

नाकाम और घाटे में होगा। (अगर उसकी फ़र्ज़ नमाज़ में) नामज़ के वाजिबात और सुन्नतों में, दुआओं और अज़कार में और उसके ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ में कोताही करने की वजह से) कोई नुक़सान साबित होगा तो रब्बे तबारक व तआला फ़रिश्तों से फ़रमाएंगे कि देखो तो मेरे इस बन्दे के पास नफ़्ल नमाज़ें भी हैं जिनसे फ़र्ज़ नमाज़ों को कामिल कर दिया जाए। फिर दूसरे आमाल (ज़कात, रोज़ा, हज वग़ैरह) का इसी तरह हिसाब होगा।

روى عن انس ﷺ قال قال رسول الله ﷺ فمن صلّى الصلوة لوقتها واسبغ لها وضوئها واتم لها قيامها و خشوعها و ركوعها و سجودها خرجت وهى بيضاء مسفرة تقول حفظك الله كما حفظتنى و من صلاها لغير وقتها ولم يسبغ لها وضوئها ولم يتم لها خشوعها ولا ركوعها ولا سجودها خرجت و هى سوداء مظلمة تقول ضيعك الله كما ضيعتنى حتى اذا كانت حيث شاء الله لُفّت كما يُلَفُّ الثوب الخلِق ثم ضرب بها وجهه۔ رواه الطبرانى فى الاوسط كذا فى الترغيب والدر المنثور۔ (فضائل نماز)

तर्जुमा—हज़रत अनस ﷺ हज़रत रसूलुल्लाह ﷺ का फ़रमान नक़ल करते हैं कि जो शख़्स नमाज़ को उसके मुक़र्ररा वक़्त पर पढ़े और नमाज़ के लिए अच्छी तरह से कामिल वुज़ू करे और नमाज़ के क़ियाम, ख़ुशूअ़, रूकूअ़ और सज्दा सही और कामिल तरीक़े से अदा करे, तो वह नमाज़ ख़ूब रोशन और रौनक़दार बनकर नमाज़ी के लिए दुआ करती जाती है कि अल्लाह तेरी ऐसी ही हिफ़ाज़त फ़रमाए, जैसी तूने मेरी हिफ़ाज़त की है और जो आदमी नमाज़ को उसके मुक़र्ररा वक़्त पर गुज़र जाने के बाद पढ़े और अच्छी तरह कामिल तरीक़े पर वुज़ू न करे, और नमाज़ के क़ियाम, ख़ुशूअ, रुकूअ और सज्दा को सही और कामिल तरीक़े पर अदा न करे तो वह नमाज़ बद-सूरत और स्याह बनकर नमाज़ी के लिए बददुआ करती जाती है कि अल्लाह तुझको ऐसा ही ख़राब व बर्बाद करे, जैसाकि तून मुझको ख़राब और बर्बाद किया है, यहां तक कि जब वह जहां अल्लाह तआला चाहे, पहुंच जाता है तो यह नमाज़ पुराने-कपड़े की तरह लपेट कर उस नमाज़ी के मुंह पर मार दी जाती है।

इन ऊपर लिखी हदीसों से साबित होता है कि नमाज़ को उसके वक़्त पर पाबन्दी के साथ अदा करना और उसके तमाम अरकान, क़ियाम, रुकूअ, सज्दा, और ख़ुशूअ व .ख़ुज़ूअ वग़ैरह को हज़रत रसूलुल्लाह ﷺ के बताए हुए सही और मस्नून तरीक़े के मुताबिक़ अदा करना हर मुसलमान मर्द और औरत के लिए बहुत ज़रूरी और अहम है। इस मक़्सद की ज़रूरत व अहमियत को निगाहों में रखकर मोहतरम हज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान आज़मी साहब मद्द ज़िल्लहुल आली (शेखुलहदीस दारुलउलूम आज़ादोल, साउथ अफ़्रीक़ा) ने यह किताब 'नमाज़ की पाबन्दी और उसकी हिफ़ाज़त' हदीस व फ़िक़्ह की कई और मोतबर् किताबों को पढ़ने के बाद मुसलमानों की नमाज़ों की इस्लाह और हिफ़ाज़त की ग़रज़ से लिखी है।

इस किताब में हज़रत मौलाना ने नमाज़ के हर रुक्न व जुज़ को अदा करने का सही और मस्नून तरीक़ा बताया है और उस तरीक़े के मुताबिक़ नमाज़ पढ़ने से पूरी नामाज़ सही और कामिल सूरत में अदा होती है, जिसका हम सबको क़ियामत के दिन हिसाब देना है और उस पर आख़िरत की कामियाबी का मदार है, साथ ही फ़र्ज़ नमाज़ों को उनके मुक़र्ररा वक़्तों पर जमाअत के साथ पढ़ने की ज़रूरत को और ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ की अहमियत को .ख़ूब वाज़ेह फ़रमाया है और आजकल नमाज़ के हर रुक्न की अदाएगी में आमतौर से होने वाली ग़लतियों की तरफ़ तवज्जोह दिला कर उसकी इस्लाह करने पर ख़ूब ज़ोर दिया है और मर्दों की पूरी नमाज़ का सही तरीक़ा बताने के बाद आख़िर में औरतों की नमाज़ का सही तरीक़ा भी बताया है। मुख़्तसर मगर यह किताब 'नमाज़ की पाबन्दी और उसकी हिफ़ाज़त' नमाज़ के बारे में एक मुख़्तसर मगर जामे और नफ़ाबख़्श किताब है, नमाज़ को सही और सुन्नत तरीक़े के मुताबिक़ अदा करने के लिए हर मुसलमान मर्द व औरत के लिए इस किताब का पढ़ना ज़रूरी है।

अल्लाह तबारक व तआला से दुआ है कि हज़रत मौलाना मौसूफ़ मद्द ज़िल्लहुल आली की तब्लीग़ी व तहरीरी और इस्लाही कोशिशों और ख़िदमतों को क़ुबूल फ़रमा कर दोनों दुनिया में बेहतरीन बदले से नवाज़े और मुसलमान भाइयों और बहनों को इस किताब की अहमियत समझने, इसके पढ़ने और अपनी फ़र्ज़, सुन्नत और नफ़्ल नमाज़ों की पाबन्दी करने की और उनको सही और सुन्नत तरीक़े के मुताबिक़ कामिल सूरत में अदा करने की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाएं

और जामिया उलूमुल-क़ुरआन जम्बूसर के शोबा नश्र व इशाअत की इन बाइज़्ज़त, क़ीमती और खुलूस भरी ख़िदमतों को क़ुबूल फ़रमा कर उसको ख़ूब-ख़ूब तरक़्क़ी अता फ़रमाएं। आमीन।

(हज़रत मौलना मुफ़्ती) इस्माईल बिन इब्राहीम मड कोदरवी
ग़ुफ़ि-र-लहू
खादिम हदीस जामिया उलूमुल क़ुरआन, जम्बोसर
ख़ादिम इफ़्ता दारुल उलूम, कंथारिया
यकुम जुमादस्सानी 1421 हि०, मुताबिक़ 3 अगस्त 2000 ई०

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलहम्दु लिल्लाहि अव्वलन व आख़िरन वस्सलातु वस्सलामु अलन्नबीयिल उम्मी अल मुस्तफ़ा व अला आलिही व अस्हाबिही व अज़्वाजिही व ज़ुर्रीयातिही अजमईन

नमाज़ की हिफ़ाज़त

नमाज़ इस्लाम का, ईमान के बाद सबसे बड़ा रुक्न है। शरीअत ने इसकी पाबन्दी और एहतिमाम से इसको सुन्नत तरीक़े के मुताबिक़ अदा करने की बहुत ताकीद की है, यहां तक कि ईमान वालों की कामियाबी की बुनियाद इसे क़रार दिया है। जो लोग नमाज़ को भूल कर और छोड़ कर पढ़ते हैं, उनको वैल और हलाकत की धमकी दी है। अल्लाह तआला क़ुरआन पाक में इर्शाद फ़रमाते हैं—

حافظوا على الصلوات والصلوة الوسطى وقوموا لله قانتين۔

(البقره :۲۳۸)

'हिफ़ाज़त करो सब नमाज़ों की (आमतौर से) और दर्मियान वाली नमाज़ (यानी अस्र की ख़ास तौर से) और नमाज़ में खड़े रहो अल्लाह के सामने आजिज़ बने हुए।' —बयानुल क़ुरआन

हिफ़ाज़त करने का मतलब यह है कि नमाज़ वक़्त पर पढ़ी जाए और हमेशा पढ़ी जाए, किसी वक़्त की न छोड़ी जाए। (बैज़ावी)

उसकी हदों और अदाएगी की हिफ़ाज़त की जाए। (इब्ने कसीर)

रिवायतों से मालूम होता है कि कुछ लोगों से जमाअत में हाज़िरी से सुस्ती हुई थी, इस पर यह आयत उतरी। हज़रत मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया—लोग (इस बैठे रहने) से बाज़ आ जाएं, वरना मैं उनके घरों में आग लगा दूंगा। (ख़ास अस्र की ताकीद इसलिए की गई कि उस वक़्त लोग मश्ग़ूल रहते हैं जिसकी वजह से अस्र की अदाएगी में देर हो जाती है या फिर फ़ौत हो जाती है।)

हदीस शरीफ़ में आता है कि यह मुनाफ़िक़ की नमाज़ है कि बैठा इन्तिज़ार करता रहता है, यहां तक कि जब सूरज पीला हो जाता है और शैतान के दोनों सींगों के दर्मियान (यानी डूबने के क़रीब) हो जाता है तो

उठकर चार चोंचें मार लेता है। (यानी जल्दी-जल्दी चार रक़अतें पढ़ लेता है।) थोड़ा सा अल्लाह तआला का ज़िक्र करता है। (मुस्लिम, मिश्कात, पृ० 60) यह अस्र की नमाज़ को देर करने पर धमकी हुई और अगर वक़्त ही निकल जाए और डूबने के बाद कोई पढ़े तो उसके बारे में हदीस में आता है—

जिसकी अस्र की नमाज़ फ़ौत हो गई (यानी वक़्त निकलने के बाद पढ़ी) गोया उससे उसकी बीवी, बच्चों को और माल व दौलत को छीन लिया गया।

(बुख़ारी पृ० 78, मुस्लिम)

साथ ही फ़रमाया—

"من ترك صلوة العصر فقد حبط عمله"

'जिसने अस्र की नमाज़ छोड़ दी, उसका अमल बेकार हुआ।

—बुख़ारी पृ० 78 व मिश्वत, पृ० 60

आज कितने मुसलमान ऐसे हैं जो दुकानों की मश्ग़ूलियत की वजह से सूरज डूबने के वक़्त नमाज़ पढ़ते देखे जाते हैं या अस्र की नमाज़ क़ज़ा कर देते हैं। इन हदीसों को याद रखना चाहिए, इसलिए आयत में ख़ास अस्र की ताकीद की गई।

अल्लाह तआला ने दूसरी आयत में फ़रमाया—

"ان الصلوة كانت على المؤمنين كتابا موقوتا" (النساء ۱۰۳)

'बेशक नमाज़ मुसलमानों पर फ़र्ज़ है अपने मुक़र्ररा वक़्तों में। (मआरिफ़ुल क़ुरआन) इसलिए बिला शरई उज़्र के, वक़्त निकलने के बाद नमाज़ पढ़ना सख़्त गुनाह है।'

एक और जगह फ़रमाया है

"فويل للمصلين الذين هم عن صلوتهم ساهون" (ماعون صفحه ٣-٤)

'सो ऐसे नमाज़ियों के लिए बड़ी ख़राबी है जो अपनी नमाज़ भुला बैठते हैं यानी तर्क कर देते हैं।'

—मआरिफ़ुल क़ुरआन

यह हाल मुनाफ़िक़ों का बयान हुआ है, लेकिन अफ़सोस है कि आज हम मुसलमानों में इसके नमूने ज़्यादा से ज़्यादा मौजूद हैं।

एक हदीस में ईशाद है, जिस की नमाज़ फ़ौत हो गई, गोया उससे बीवी-बच्चे और माल छीन लिया गया।

—फ़त्हुल बारी, भाग 2, पृ० 30 अन इब्नेहिब्बान

यानी दुन्यवी एतबार के इस ख़सारे और नुक़्सान पर जितना सदमा होता है, एक नमाज़ के क़ज़ा करने पर उतना सदमा होना चाहिए और आख़िरत के

लिहाज़ से उतने ही नुक़्सान का तसव्वुर करना चाहिए।

एक हदीस में इर्शाद है, जो नमाज़ों की पाबन्दी करेगा, नमाज़ उसके लिए क़ियामत के दिन नूर, दलील और नजात का ज़रिया होगी और जो पाबन्दी नहीं करेगा उसके लिए नूर, दलील और नमाज़ का ज़रिया नहीं होगी और ऐसा आदमी, क़ारून, फ़िरऔन, हामान और उबई बिन ख़ल्फ़ के साथ होगा। -मिश्कत, पृ० 59 अन अहमद व दारमी

अल्लाह तआला पूरी उम्मत की इससे हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन

जमाअत का एहतिमाम

जमाअत के एहतिमाम के बग़ैर भी नमाज़ का हक़ अदा नहीं हो सकता। क़ुरआन में जगह-जगह नमाज़ क़ायम करने का हुक्म है। इक़ामते सलात (नमाज़ क़ायम करना) सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने को नहीं कहते, बल्कि नमाज़ को हर जेहत और हैसियत से दुरूस्त करने का नाम इक़ामत है, जिसमें नमाज़ के तमाम वाजिब, मुस्तहब और फिर उन्हें लाज़िमी तौर पर हमेशा करते रहना भी शामिल है। —मआरिफ़ुल क़ुरआन, भाग 1, पृ० 111

मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब रह० एक जगह लिखते हैं कि सहाबा, ताबिईन और उम्मत के फ़ुक़हा का एक गिरोह जमाअत की नमाज़ को वाजिब कहता है और उसके छोड़ने को सख़्त गुनाह और कुछ सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम तो उस नमाज़ को जायज़ क़रार नहीं देते जो बिला उज़्रे शरई जमाअत के बग़ैर पढ़ी जाए। —मआरिफ़ुल क़ुरआन

हदीसों में जमाअत छोड़ने पर बड़ी वईदें आई हुई हैं। एक हदीस में ईशाद है क़सम है उस ज़ात की, जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, मेरा इरादा होता है लकड़ी जमा करने का हुक्म दूं, फिर अज़ान दिलवाऊं और किसी को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दूं और मैं उन लोगों के पास जाऊं, जो घरों में नमाज़ पढ़ लेते हैं, और उनको कोई उज़्र भी नहीं, उनके घरों को आग लगा दूं।

—बुख़ारी भाग 1, पृ० 89, मुस्लिम, भाग 1, पृ० 232

एक हदीस में इर्शाद है अगर घरों में औरतें और बच्चे न होते तो मैं नमाज़ क़ायम करता और अपने नवजवानों को हुक्म देता कि घरों को आग लगा दें।

—मिश्कात, पृ० 87 अन अहमद

एक हदीस में इर्शाद है मुनाफ़िक़ों पर इशा और फ़ज्र से ज़्यादा कोई नमाज़ बोझ नहीं, अगर इन दोनों नमाज़ों का (जमाअत से पढ़ने का) सवाब

उनको मालूम हो जाए तो सुरीन के बल घसिट कर (मस्जिद) आएं।

—बुख़ारी, भाग 1, पृ० 90, मुस्लिम, भाग 1, पृ० 232

एक हदीस में इर्शाद है, जिसने अज़ान सुनी और उज़्र न होने के बावजूद जमाअत में शरीक नहीं हुआ तो उसकी वह नमाज़ जो उसने पढ़ी, क़ुबूल नहीं। पूछा गया, उज़्र किया है? इर्शाद फ़रमाया ख़ौफ़ और मरज़। (मिश्कात, पृ० 96 अन अबी दाऊद) ऐसा ख़ौफ़ और मरज़ मुराद है जो मस्जिद के आने में रोक बने।

एक नाबीना (अंधे) सहाबी ﷺ ने रसूल ﷺ के दरबार में अर्ज़ किया, मुझे कोई मस्जिद ले जाने वाला नहीं है, क्या मुझे घर में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त है? हज़रत मुहम्मद ﷺ ने इजाज़त दे दी। जब वह नाबीना सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु जाने लगे तो बुला कर आप ﷺ ने पूछा, अज़ान सुनते हो? उन्होंने अर्ज़ किया, जी हां। फ़रमाया, तो हाज़िर होना ज़रूरी है।

—मुस्लिम, जिल्द 1, पृ० 332

इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जो आदमी कल क़ियामत के दिन अल्लाह तआला से मुस्लिम बन कर मिलना पसन्द करता हो, उसको चाहिए कि अज़ान के वक़्त नमाज़ों की पाबन्दी करे। अल्लाह तआला ने अपने नबी ﷺ के लिए हिदायत के तरीक़े मुक़र्रर फ़रमा दिए हैं। ये नमाज़ें भी उस हिदायत के तरीक़ों में से हैं। अगर तुम भी उस पीछे रहने वाले की तरह घर में नमाज़ पढ़ोगे, तो अपने नबी का तरीक़ा छोड़ बैठोगे और नबी का तरीक़ा छोड़ दोगे तो गुमराह हो जाओगे। जो आदमी अच्छी तरह वुज़ू करके मस्जिद की तरफ़ चलता है तो उसके हर क़दम पर एक नेकी मिलती है, उसका एक दर्जा बुलन्द होता है, एक गुनाह मिटाया जाता है। हमारे ज़माने में कोई खुला मुनाफ़िक़ ही जमाअत के पीछे रहता था, वरना मरीज़ आदमी को दो आदमियों के सहारे लाकर सफ़ में खड़ा कर दिया जाता था। —मुस्लिम पृ० 232

इन सहीह हदीसों को बार-बार पढ़ें और उम्मत का हाल देखें, अपने और दूसरे की हालात की इस्लाह की फ़िक्र करें। दूसरी तरफ़ मस्जिद आने का सवाब देख लें, जमाअत की नमाज़ का अकेले की नमाज़ पर 27 गुना सवाब है। (बुख़ारी पृ० 89) जिसने इशा की नमाज़ जमाअत से पढ़ी, गोया उसने आधी रात क़ियाम किया और सुबह की नमाज़ भी जमाअत से पढ़ ली, तो गोया पूरी रात क़ियाम किया। (मुस्लिम, पृ० 232) अगर ज़रा हिम्मत कर लें

तो इस डरावे से बच जाएं और बहुत बड़े सवाब से मालामाल हो जाएं। अल्लाहुम-म वफ़्फ़िक़्ना हाज़ा लि- जमीईल उम्मत।

हज़रत उमर ﷺ का ख़त— सहाबा किराम रज़ि० के यहां नमाज़ का क्या एहतिमाम था, हज़रत उमर ﷺ के इस ख़त से इसका अन्दाज़ा होता है। अपने गवर्नरों के नाम ख़तों में यह लिखवाया, 'तुम्हारा सबसे अहम काम मेरे ख़्याल में नमाज़ है। जिसने नमाज़ की हिफ़ाज़त की और उस पर पाबन्दी की, उसने अपने दीन की हिफ़ाज़त की और जिसने उनको ज़ाया किया, वह दीन के दूसरे हुक्मों को इससे ज़्यादा ज़ाया (बर्बाद) करेगा' (मिश्कात, पृ० 59 अनिल मुअत्ता) अब सोचिए नमाज़ को ज़ाया करके दीन की हिफ़ाज़त कैसे होगी?

तज्वीदे क़ुरआन की ज़रूरत— नमाज़ की हिफ़ाज़त में यह भी दाख़िल है कि उसके तमाम अरकान, फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत और मुस्तहब का एहतिमाम किया जाए। नमाज़ का एक रुक्न क़ुरआन का तज्वीद के साथ पढ़ना भी है। क़ुरआन का तज्वीद के साथ पढ़ना ज़रूरी है, इसलिए कि नमाज़ मुकम्मल नहीं हो सकती, जब तक कि नमाज़ में पढ़ा जाने वाला क़ुरआन दुरुस्त और सही न हो, इसलिए हर आदमी के लिए ज़रूरी है कि जितना क़ुरआन नमाज़ में पढ़ना है, उसको तज्वीद के साथ पढ़ना सीखे। (यानी हर्फ़ों को उनके मख़ारिज से सिफ़ात के साथ अदा करे) जो आदमी कोशिश करेगा और ग़लत पढ़ता रहेगा, वह गुनाहगार होगा, उसकी नमाज़ भी मुकम्मल नहीं कहलाई जा सकती। अरबी ज़ुबान बड़ी फ़सीह व बलीग़ ज़ुबान है, ज़रा हर्फ़ों के बदलने से मानी बदल जाते हैं और मानी के बदलने से नमाज़ ख़राब हो जाती है।—शामी, पृ० 462 व 592

पुराने हनफ़ी फ़ुक़हा का इसी बात पर फ़त्वा था, अगरचे बाद के लोगों ने आसानी के ख़्याल से काफ़ी कुछ फैला दिया है और जायज़ होने का फ़त्वा दिया है, लेकिन आदमी कोशिश नहीं करेगा तो गुनाहगार होगा।

इस मसले पर बहुत तवज्जोह करने की ज़रूरत है। इसका तक़ाज़ा यह है कि मस्जिदों में किसी क़ारी से बड़े लोगों के तज्वीद सीखने का इन्तिज़ाम हो। अल्लाह तआला उम्मत को इसकी तौफ़ीक़ नसीब करे। आमीन। हरमैन शरीफ़ैन में ऐसे हलक़े देखे जाते हैं, ख़ुदा करे यह सिलसिला हर मस्जिद में क़ायम हो।

ऐसे ही जो दुआएं नमाज़ में पढ़ी जाती हैं, उनका भी तलफ़्फ़ुज़ सही होना चाहिए। क़ुरआन की तज्वीद से यह मक़्सद भी हासिल होगा। नमाज़ में जो क़ुरआन और दुआएं पढ़ी जाती हैं, इज्माली तौर पर उनका मफ़हूम भी जानना चाहिए, ताकि हमें यह मालूम हो कि हम अल्लाह से क्या कह रहे हैं, इससे

ख़ुशूअ़-ख़ुज़ूअ़ में इज़ाफ़ा होगा जो नमाज़ की रूह और जान है, जिसके बग़ैर नमाज़ सिर्फ़ एक ढांचा है, जिसमें रूह नहीं।

नमाज़ के सही और मक़्बूल होने के लिए यह भी ज़रूरी है कि नमाज़ के मसाइल की जानकारी हो, फ़राइज़ व वाजिबात, सुनन व मुस्तहिब्बात को जाना जाए। अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया :—

'मुझको नमाज़ पढ़ते हुए जिस तरह देखते हो, उसी तरह नमाज़ पढ़ो।'

—बुख़ारी, भाग 1, पृ० 88

और आप ﷺ की नमाज़ में सुन्नत और मुस्तहब चीज़ें भी थीं, इनमें पैरवी होनी चाहिए, इसके लिए किसी मोतबर किताब का पढ़ना और सीखना ज़रूरी है इस जगह हम कुछ मामलों की तरफ़ तवज्जोह दिलाते हैं जिनमें आमतौर से ग़लती होती है—

तक्बीरे तहरीमा और क़ियाम की हालत की इस्लाह

● तक्बीरे तहरीमा के वक़्त सर को नहीं झुकाना चाहिए। सर सीधा रखना चाहिए और दोनों हाथों को कानों के मुक़ाबिल तक उठाना चाहिए, कुछ लोग सिर्फ़ ज़रा-सा इशारा कर देते हैं, यह सुन्नत के ख़िलाफ़ है। — शामी

● हाथों को उठाएं तो दोनों हथेलियां क़िब्ले की तरफ़ हों। कुछ लोग हथेलियों का रुख़ क़िब्ले की तरफ़ करने के बजाए कानों की तरफ़ कर लेते हैं, यह सही नहीं है।

● तक्बीरे तहरीमा के वक़्त हाथों को उठाएं तो उंगलियों को बिल्कुल न मिलाएं, दूर-दूर रखें, बल्कि फ़ितरी तौर पर अपनी हालत में रखें। —शामी अल्लाहु अकबर कहने के बाद दोनों हाथों को बग़ैर लटकाए हुए नाफ़ के नीचे बांध लें। कुछ लोग पहले हाथ लटकाते हैं, फिर बांधते हैं, यह सही नहीं है।

● दाहिनी हथेली बाईं हथेली पर रखकर अंगूठे और छोटी उंगली से कलाई को पकड़ लें और बाक़ी तीनों उंगलियों को कलाई पर फैला लें। इस तरह कई हदीसों पर अमल हो जाता है।

—तिर्मिज़ी

● कुछ लोग बाईं हथेली को लटका देते हैं और बाईं कलाई को उंगलियों से पकड़े रखते हैं, यह सही नहीं है।

● बेहतर है कि दोनों पांव क़रीब-क़रीब हों, चार उंगली का फ़ासला हो, यह ख़ुशूअ़ से क़रीब है। (शामी) और सज्दे की हालत में दोनों एड़ियों को

तो इस डरावे से बच जाएं और बहुत बड़े सवाब से मालामाल हो जाएं। अल्लाहुम-म वफ़्फ़िक़ हाज़ा लि- जमीईल उम्मत।

हज़रत उमर ﷺ का ख़त— सहाबा किराम रज़ि० के यहां नमाज़ का क्या एहतिमाम था, हज़रत उमर ﷺ के इस ख़त से इसका अन्दाज़ा होता है। अपने गवर्नरों के नाम ख़तों में यह लिखवाया, 'तुम्हारा सबसे अहम काम मेरे ख़्याल में नमाज़ है। जिसने नमाज़ की हिफ़ाज़त की और उस पर पाबन्दी की, उसने अपने दीन की हिफ़ाज़त की और जिसने उनको ज़ाया किया, वह दीन के दूसरे हुक्मों को इससे ज़्यादा ज़ाया (बर्बाद) करेगा' (मिश्कात, पृ० 59 अनिल मुअत्ता) अब सोचिए नमाज़ को ज़ाया करके दीन की हिफ़ाज़त कैसे होगी?

तज्वीदे क़ुरआन की ज़रूरत— नमाज़ की हिफ़ाज़त में यह भी दाख़िल है कि उसके तमाम अरकान, फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत और मुस्तहब का एहतिमाम किया जाए। नमाज़ का एक रुक्न क़ुरआन का तज्वीद के साथ पढ़ना भी है। क़ुरआन का तज्वीद के साथ पढ़ना ज़रूरी है, इसलिए कि नमाज़ मुकम्मल नहीं हो सकती, जब तक कि नमाज़ में पढ़ा जाने वाला क़ुरआन दुरुस्त और सही न हो, इसलिए हर आदमी के लिए ज़रूरी है कि जितना क़ुरआन नमाज़ में पढ़ना है, उसको तज्वीद के साथ पढ़ना सीखे। (यानी हर्फ़ों को उनके मख़ारिज से सिफ़ात के साथ अदा करे) जो आदमी कोशिश करेगा और ग़लत पढ़ता रहेगा, वह गुनाहगार होगा, उसकी नमाज़ भी मुकम्मल नहीं कहलाई जा सकती। अरबी ज़ुबान बड़ी फ़सीह व बलीग़ ज़ुबान है, ज़रा हर्फ़ों के बदलने से मानी बदल जाते हैं और मानी के बदलने से नमाज़ ख़राब हो जाती है।—शामी, पृ० 462 व 592

पुराने हनफ़ी फ़ुक़हा का इसी बात पर फ़त्वा था, अगरचे बाद के लोगों ने आसानी के ख़्याल से काफ़ी कुछ फैला दिया है और जायज़ होने का फ़त्वा दिया है, लेकिन आदमी कोशिश नहीं करेगा तो गुनाहगार होगा।

इस मसले पर बहुत तवज्जोह करने की ज़रूरत है। इसका तक़ाज़ा यह है कि मस्जिदों में किसी क़ारी से बड़े लोगों के तज्वीद सीखने का इन्तिज़ाम हो। अल्लाह तआला उम्मत को इसकी तौफ़ीक़ नसीब करे। आमीन। हरमैन शरीफ़ैन में ऐसे हलक़े देखे जाते हैं, ख़ुदा करे यह सिलसिला हर मस्जिद में क़ायम हो।

ऐसे ही जो दुआएं नमाज़ में पढ़ी जाती हैं, उनका भी तलफ़्फ़ुज़ सही होना चाहिए। क़ुरआन की तज्वीद से यह मक़्सद भी हासिल होगा। नमाज़ में जो क़ुरआन और दुआएं पढ़ी जाती हैं, इज्माली तौर पर उनका मफ़हूम भी जानना चाहिए, ताकि हमें यह मालूम हो कि हम अल्लाह से क्या कह रहे हैं, इससे

ख़ुशूअ-ख़ुज़ूअ में इज़ाफ़ा होगा जो नमाज़ की रूह और जान है, जिसके बग़ैर नमाज़ सिर्फ़ एक ढांचा है, जिसमें रूह नहीं।

नमाज़ के सही और मक़्बूल होने के लिए यह भी ज़रूरी है कि नमाज़ के मसाइल की जानकारी हो, फ़राइज़ व वाजिबात, सुनन व मुस्तहिब्बात को जाना जाए। अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया :—

'मुझको नमाज़ पढ़ते हुए जिस तरह देखते हो, उसी तरह नमाज़ पढ़ो।'

—बुख़ारी, भाग 1, पृ० 88

और आप ﷺ की नमाज़ में सुन्नत और मुस्तहब चीज़ें भी थीं, इनमें पैरवी होनी चाहिए, इसके लिए किसी मोतबर किताब का पढ़ना और सीखना ज़रूरी है इस जगह हम कुछ मामलों की तरफ़ तवज्जोह दिलाते हैं जिनमें आमतौर से ग़लती होती है—

तक्बीरे तहरीमा और क़ियाम की हालत की इस्लाह

● तक्बीरे तहरीमा के वक़्त सर को नहीं झुकाना चाहिए। सर सीधा रखना चाहिए और दोनों हाथों को कानों के मुक़ाबिल तक उठाना चाहिए, कुछ लोग सिर्फ़ ज़रा-सा इशारा कर देते हैं, यह सुन्नत के ख़िलाफ़ है। — शामी

● हाथों को उठाएं तो दोनों हथेलियां क़िब्ले की तरफ़ हों। कुछ लोग हथेलियों का रुख़ क़िब्ले की तरफ़ करने के बजाए कानों की तरफ़ कर लेते हैं, यह सही नहीं है।

● तक्बीरे तहरीमा के वक़्त हाथों को उठाएं तो उंगलियों को बिल्कुल न मिलाएं, दूर-दूर रखें, बल्कि फ़ितरी तौर पर अपनी हालत में रखें। —शामी अल्लाहु अकबर कहने के बाद दोनों हाथों को बग़ैर लटकाए हुए नाफ़ के नीचे बांध लें। कुछ लोग पहले हाथ लटकाते हैं, फिर बांधते हैं, यह सही नहीं है।

● दाहिनी हथेली बाईं हथेली पर रखकर अंगूठे और छोटी उंगली से कलाई को पकड़ लें और बाक़ी तीनों उंगलियों को कलाई पर फैला लें। इस तरह कई हदीसों पर अमल हो जाता है। —तिर्मिज़ी

● कुछ लोग बाईं हथेली को लटका देते हैं और बाईं कलाई को उंगलियों से पकड़े रखते हैं, यह सही नहीं है।

● बेहतर है कि दोनों पांव क़रीब-क़रीब हों, चार उंगली का फ़ासला हो, यह ख़ुशूअ से क़रीब है। (शामी) और सज्दे की हालत में दोनों एड़ियों को

मिलाने में ज़्यादा हरकत नहीं करनी पड़ेगी, एड़ियों का मिलाना सुन्नत है।

(सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा, भाग 1, पृ० 328, एलाउस्सुनन, भाग 3, पृ० 32 व शामी भाग 1, पृ० 364)

● क़ियाम की हालत में हरकत नहीं करनी चाहिए, कुछ इमाम लोग क़िरात करते हुए हरकत करते हैं, जो सही नहीं है।

● जिस्म का ज़ोर दोनों पांवों पर बराबर हो तो बेहतर है। अगर एक पर ज़्यादा हो तो दूसरे में ख़म और टेढ़ापन नहीं आना चाहिए।

● दोनों पांव क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जह हों, टेढ़े-मेढ़े न हों, और पांव एक लाइन में हों, आगे-पीछे न हों।

● क़ियाम की हालत में निगाह सज्दागाह में हो, इधर-उधर न देखें, जहां तक हो सके, खुजलाने से भी परहेज़ करें। अगर सख़्त ज़रूरत हो तो सिर्फ़ एक हाथ इस्तेमाल करें और कम से कम।

('नमाज़ें सुन्नत के मुताबिक़ पढ़ें' लेख : हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी मद्दज़िल्लहुल आली)

रुकूअ़ की इस्लाह

● रुकूअ़ की हालत में दोनों हथेलियों को घुटनों पर रखकर उंगलियों को फैलाकर घुटनों को पकड़ें, सिर्फ़ हथेलियों का रख देना सुन्नत तरीक़ा नहीं।

● सर, पीठ और सरीन को बराबर रखें, न सर से नीचा करें, न ऊंचा, बाज़ू को बग़ल से जुदा रखें, बग़ल में घुसा हुआ न हो, हाथ तना हुआ हो, उसमें ख़म न हो। —शामी

● पांव को भी सीधा रखें, घुटने के पास ख़म नहीं होना चाहिए।

—शामी, भाग 1, पृ० 365

● इत्मीनान से तीन बार 'सुबहा-न रब्बियल अज़ीम' पढ़ें, इससे कम मकरूह है, इससे ज़्यादा बेहतर है। हमारे कुछ उलेमा रुकूअ, सज्दा में तीन बार तस्बीह पढ़ने को वाजिब कहते हैं, लेकिन सही यह है कि सुन्नत है। पूरी तस्बीह की अदाएगी सही रखें, खास तौर से 'ज़ो' को। —शामी

● रुकूअ की हालत में भी पांव क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जह हों और दोनों टख़ने सामने हों। —शामी

● रुकूअ की हालत में नज़रें पांव पर हों(नमाज़ें सुन्नत के मुताबिक़ पढ़ें, मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी मद्द ज़िल्लहु से लिया गया)

● कुछ लोगों की यह आदत है कि रुकूअ़ से उठने के बाद दोनों हाथों से अपने कुरते के पीछे के दामन को छूते हैं या यों कहिए उसको बराबर करते हैं, यह एक बुरी आदत है, बे-ज़रूरत सिर्फ़ आदत होने की वजह से ऐसा करते हैं, इसके मकरूह होने में तो कोई शुबहा नहीं, इससे आगे यह ख़तरा है कि कहीं यह नमाज़ ख़राब करने वाली न हो, क्योंकि अमले कसीर उसको कहते हैं, जिसमें दोनों हाथ लगाए जाएं, इसलिए इससे परहेज़ बहुत ज़रूरी है, जिस को भी ऐसा करते देखें, इकराम व एहतराम के साथ उसको मना करें।

रुकूअ़, सज्दा, क़ौमा व जलसा में इत्मीनान

रुकूअ़ से उठकर खड़े होने को क़ौमा कहते हैं और दोनों सज्दों के दर्मियान बैठने को जलसा कहते हैं। रुकूअ़, सज्दा, क़ौमा और जलसा इन चारों जगहों पर तादील और इत्मीनान वाजिब है, इत्मीनान इसको कहते हैं कि वहां पहुंच कर आज़ा में सुकून हो जाए, हर उज़्व अपनी जगह पर ठहर जाए और यह ठहराव और सुकून एक तस्बीह जितना ज़रूरी है, इसमें बहुत ग़फ़लत होती है। जो लोग इत्मीनान नहीं करते, अगर जान-बूझ कर ऐसा करते हैं तो उन पर वाजिब है कि दोबारा उस नमाज़ को पढ़ें इसलिए कि वाजिब छूट गया है और अगर भूल कर ऐसा हुआ तो सज्दा सह्व करना चाहिए। अगर सज्दा सह्व नहीं किया जो वाजिब छोड़ने की वजह से नमाज़ दोबारा पढ़नी चाहिए।

—शामी, भाग 1, पृ० 433

रुकूअ और सज्दे में तस्बीहात का एहतिमाम किया जाता है, इसलिए अक्सर लोगों से इसमें कोताही नहीं होती, कुछ ही लोग कोताही करते हैं, लेकिन क़ौमा और जलसे में कोताही बहुत से लोगों से होती है, इसलिए कि इसमें जो दुआएं वारिद हुई हैं, उनको बिल्कुल ही भुला दिया गया है। अवाम और ख़्वास दोनों ने उनको छोड़ रखा है।

क़ौमा में आंहज़रत ﷺ यह दुआ पढ़ते थे—

'सामिअल्लाहु लिमन हमिदह अल्लाहुम-म रब्बना ल-कल हम्दु म-ल अस्समावाति व मल-अल-आर्ज़ि व म-ल-अ मा शेअ-त मिन शौइन बाद'

—मुस्लिम शरीफ़, जिल्द 1, पृ० 190

इसी तरह की रिवायत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा, अबू सईद खुदरी ﷺ और इब्ने अब्बास रज़ि० से मुस्लिम शरीफ़ में ज़िक्र की गई है। यह हम्द और लम्बी भी रिवायत की गई है।

मिलाने में ज़्यादा हरकत नहीं करनी पड़ेगी, एड़ियों का मिलाना सुन्नत है।

(सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा, भाग 1, पृ० 328, एलाउस्सुनन, भाग 3, पृ० 32 व शामी भाग 1, पृ० 364)

● क़ियाम की हालत में हरकत नहीं करनी चाहिए, कुछ इमाम लोग क़िरात करते हुए हरकत करते हैं, जो सही नहीं है।

● जिस्म का ज़ोर दोनों पांवों पर बराबर हो तो बेहतर है। अगर एक पर ज़्यादा हो तो दूसरे में ख़म और टेढ़ापन नहीं आना चाहिए।

● दोनों पांव क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जह हों, टेढ़े-मेढ़े न हों, और पांव एक लाइन में हों, आगे-पीछे न हों।

● क़ियाम की हालत में निगाह सज्दागाह में हो, इधर-उधर न देखें, जहां तक हो सके, खुजलाने से भी परहेज़ करें। अगर सख़्त ज़रूरत हो तो सिर्फ़ एक हाथ इस्तेमाल करें और कम से कम।

('नमाज़ें सुन्नत के मुताबिक़ पढ़ें' लेख : हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी मद्दज़िल्लहुल आली)

रुकूअ़ की इस्लाह

● रुकूअ़ की हालत में दोनों हथेलियों को घुटनों पर रखकर उंगलियों को फैलाकर घुटनों को पकड़ें, सिर्फ़ हथेलियों का रख देना सुन्नत तरीक़ा नहीं।

● सर, पीठ और सरीन को बराबर रखें, न सर से नीचा करें, न ऊंचा, बाज़ू को बग़ल से जुदा रखें, बग़ल में घुसा हुआ न हो, हाथ तना हुआ हो, उसमें ख़म न हो। —शामी

● पांव को भी सीधा रखें, घुटने के पास ख़म नहीं होना चाहिए।

—शामी, भाग 1, पृ० 365

● इत्मीनान से तीन बार 'सुबहा-न रब्बियल अज़ीम' पढ़ें, इससे कम मकरूह है, इससे ज़्यादा बेहतर है। हमारे कुछ उलेमा रुकूअ, सज्दा में तीन बार तस्बीह पढ़ने को वाजिब कहते हैं, लेकिन सही यह है कि सुन्नत है। पूरी तस्बीह की अदाएगी सही रखें, ख़ास तौर से 'ज़ो' को। —शामी

● रुकूअ की हालत में भी पांव क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जह हों और दोनों टख़ने सामने हों। —शामी

● रुकूअ की हालत में नज़रें पांव पर हों(नमाज़ें सुन्नत के मुताबिक़ पढ़ें, मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी मद्द ज़िल्लहु से लिया गया)

● कुछ लोगों की यह आदत है कि रुकूअ़ से उठने के बाद दोनों हाथों से अपने कुरते के पीछे के दामन को छूते हैं या यों कहिए उसको बराबर करते हैं, यह एक बुरी आदत है, बे-ज़रूरत सिर्फ़ आदत होने की वजह से ऐसा करते हैं, इसके मकरूह होने में तो कोई शुबहा नहीं, इससे आगे यह ख़तरा है कि कहीं यह नमाज़ ख़राब करने वाली न हो, क्योंकि अमले कसीर उसको कहते हैं, जिसमें दोनों हाथ लगाए जाएं, इसलिए इससे परहेज़ बहुत ज़रूरी है, जिस को भी ऐसा करते देखें, इकराम व एहतराम के साथ उसको मना करें।

रुकूअ़, सज्दा, क़ौमा व जलसा में इत्मीनान

रुकूअ़ से उठकर खड़े होने को क़ौमा कहते हैं और दोनों सज्दों के दर्मियान बैठने को जलसा कहते हैं। रुकूअ़, सज्दा, क़ौमा और जलसा इन चारों जगहों पर तादील और इत्मीनान वाजिब है, इत्मीनान इसको कहते हैं कि वहां पहुंच कर आज़ा में सुकून हो जाए, हर उज़्व अपनी जगह पर ठहर जाए और यह ठहराव और सुकून एक तस्बीह जितना ज़रूरी है, इसमें बहुत ग़फ़लत होती है। जो लोग इत्मीनान नहीं करते, अगर जान-बूझ कर ऐसा करते हैं तो उन पर वाजिब है कि दोबारा उस नमाज़ को पढ़ें इसलिए कि वाजिब छूट गया है और अगर भूल कर ऐसा हुआ तो सज्दा सह्व करना चाहिए। अगर सज्दा सह्व नहीं किया जो वाजिब छोड़ने की वजह से नमाज़ दोबारा पढ़नी चाहिए।

—शामी, भाग 1, पृ० 433

रुकूअ और सज्दे में तस्बीहात का एहतिमाम किया जाता है, इसलिए अक्सर लोगों से इसमें कोताही नहीं होती, कुछ ही लोग कोताही करते हैं, लेकिन क़ौमा और जलसे में कोताही बहुत से लोगों से होती है, इसलिए कि इसमें जो दुआएं वारिद हुई हैं, उनको बिल्कुल ही भुला दिया गया है। अवाम और ख़वास दोनों ने उनको छोड़ रखा है।

क़ौमा में आंहज़रत ﷺ यह दुआ पढ़ते थे—

'सामिअल्लाहु लिमन हमिदह अल्लाहुम-म रब्बना ल-कल हम्दु म-ल अस्समावाति व मल-अल-आर्ज़ि व म-ल-अ मा शेअ-त मिन शौइन बाद'

—मुस्लिम शरीफ़, जिल्द 1, पृ० 190

इसी तरह की रिवायत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा, अबू सईद खुदरी ؓ और इब्ने अब्बास रज़ि० से मुस्लिम शरीफ़ में ज़िक्र की गई है। यह हम्द और लम्बी भी रिवायत की गई है।

तिर्मिज़ी में हज़रत अली ﷺ से ये अलफ़ाज़ रिवायत किए गए हैं—

'समिअल्लाहु लिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्दु म-ल अस्समावाति व म-ल-अल अर्ज़ि व म-ल-अ मा बैनहुमा व मल-अ मा शिअ-त मिम-बाद'

—भाग 1, पृ० 61

तिर्मिज़ी में एक जगह यह भी है कि आप ﷺ जब फ़र्ज़ नमाज़ के लिए खड़े होते तो यह पढ़ते। —भाग 2, पृ० 180, किताबुद्दावात

तिर्मिज़ी ने बताया कि यह हदीस हसन सहीह है। इससे मालूम हुआ कि फ़र्ज़ नमाज़ में भी पढ़ सकते हैं। फ़र्ज़ का लफ़्ज़ अबू दाऊद वग़ैरह में भी है।

जलसे में हज़रत ﷺ यह दुआ पढ़ते थे—

'अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली वर्हम्नी व आफ़िनी वह्दिनी वर्ज़ुक़नी'

—अबू दाऊद, भाग 1, पृ० 123

तिर्मिज़ी में भी यह हदीस है, इसमें 'अजिर्नी' का इज़ाफ़ा है।

हाकिम ने मुस्तदरक में इस रिवायत को ज़िक्र करके फ़रमाया सहीहुल अस्नाद यानी सनदों के एतबार से सही है। —मुस्तदरक, भाग 1, पृ० 211

शामी ने हुलीया से नक़ल किया, नववी ने हसन बताया है, और हाकिम ने सहीह बताया है। —रद्दुल मुख़्तार, भाग 1, पृ० 472

क़ौमा और जलसा की इन दुआओं का एहतिमाम करना चाहिए। आंहज़रत ﷺ की सुन्नत है, सुन्नतों और नफ़्लों और इन्फ़िरादी फ़र्ज़ नमाज़ में तो इन दुआओं का पढ़ना बिला इख़्तिलाफ़ मुस्तहब और सुन्नत है

—शामी, भाग 1, पृ० 455

फ़र्ज़ नमाज़ में इमाम होने की हालत में भी जायज़ है, बल्कि मौजूदा ज़माने में जबकि क़ौमा और जलसा में बहुत कोताही पाई जाती है, मोहतरम इमामों को पढ़ना भी मुस्तहब है। अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी ने यही राय ज़ाहिर की है। —रद्दुल मुख़्तार, भाग 1, पृ० 455, 472

अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह० फ़रमाते हैं, क़ौमा की दुआएं सहीहैन में आई हैं, जलसे की दुआएँ सुनन में रिवायत की गई हैं। जलसे में इमाम अहमद के यहां एक बार 'अल्ला-हुम्मग़्फ़िरली' कहना फ़र्ज़ है। मैं कहता हूं कि हनफ़ी को भी इसका एहतिमाम करना चाहिए। इसलिए कि रुकूअ-सज्दा में अज़्कार की वजह से कमी नहीं होती, लेकिन क़ौमा और जलसा में कसरत से कोताही होती है। इसलिए मैं कहता हूं कि इन दोनों में

भी अज़्कार का एहतिमाम करना चाहिए।

—फ़ैज़ुल बारी, तक़रीर सहीह बुख़ारी, भाग 2, पृ० 309

मआरिफ़ुस्सुनन में भी अल्लामा कश्मीरी का इसी तरह का क़ौल ज़िक्र किया गया है। —भाग 2, पृ० 68

क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती रहमतुल्लाहि अलैहि ने भी जलसे में ऊपर ज़िक्र की गई दुआ के पढ़ने के बारे में लिखा है।

—मा लाबुद-द मिन्हु, मुतर्जम पृ० 62

इनशाअल्लाह इसका एहतमाम करने से नमाज़ सही होगी।

एक बार हज़रत हुज़ैफ़ा ؓ ने एक आदमी को इस तरीक़े पर नमाज़ पढ़ते हुए देखा कि वह रुकूअ-सज्दा नातमाम कर रहे हैं, तो हज़रत हुज़ैफ़ा ؓ ने फ़रमाया कि तुमने सही तौर पर नमाज़ नहीं पढ़ी, अगर तुम्हारी (इसी हालत में) मौत आ जाए तो अल्लाह ने मुहम्मद ﷺ को जिस फ़ितरत पर पैदा फ़रमाया है, उसके ख़िलाफ़ पर मरोगे। —बुख़ारी शरीफ़, भाग 1, पृ० 109

इसलिए रुकू, सज्दा, क़ौमा और जलसा को ख़ूब इत्मीनान से अदा करना चाहिए।

सज्दा की तस्हीह

- क़ौमा से सज्दे में जाते हुए सीने को आगे की तरफ़ न झुकाएं, बल्कि उसको सीधा रखें, सिर्फ़ पांव को मोड़ कर नीचे की तरफ़ जाएं। कुछ लोग पहले सीना झुका देते हैं, जिससे एक ज़्यादा रुकूअ पैदा हो जाता है, यह मना है। (शामी नोमानिया, भाग 1, पृ० 334) जब तक घुटने ज़मीन तक न पहुंचें, ऊपर के हिस्से को झुकाने से मुम्किन हद तक परहेज़ करें।
- सज्दा में जाते हुए पहले हाथ घुटने पर रखें, फिर घुटने ज़मीन पर रखें, फिर हाथ, फिर पेशानी के साथ नाक भी ज़मीन से लगनी चाहिए।

—सुनने बैहक़ी, भाग 2, पृ 100 और शामी

- सज्दे में दोनों हाथ रखें, तो उंगलियां बन्द हों, मिली हुई हों, उनके दर्मियान फ़ासला न हो।—सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा, भाग 1, पृ० 324, शामी भाग 1, पृ० 252
- सब उंगलियां क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जह हों, यहां तक कि अंगूठा भी, इसका ख़ास ख़्याल रखें,
- सज्दा खुल कर करें यानी बाज़ू, बग़ल से दूर हों, बग़लें खुली हुई

हों, रानें पेट से जुदा रखें, पेट रान पर न हो।

● दोनों बांहों को ज़मीन पर न रखें, सिर्फ़ हथेलियां रखें, ज़राऐन (कलाइयों) को ऊपर रखेंगे। —तिर्मिज़ी, शामी

● फ़र्ज़ नमाज़ में दोनों कोहनियों को इतना न फैलाएं कि दोनों तरफ़ के नमाज़ियों को तक्लीफ़ न हो, जितनी गुंजाइश हो उतना ही खोलें।

● चेहरे को दोनों हाथों के दर्मियान इस तरह रखें कि अंगूठों के सिरे कानों की लौ के सामने हों।

● सज्दे में जाएं तो दोनों घुटने क़रीब-क़रीब रखें।

—इब्ने ख़ुज़ैमा, भाग 1, पृ० 328, एलाउस्सुनन, भाग 3, पृ० 32

● दोनों पांवों की उंगलियों को मोड़कर क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जह करें, सिर्फ़ सीधी उंगलियां ज़मीन पर रख देना सुन्नत के ख़िलाफ़ है। उंगलियों को क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जह होना चाहिए। —बुख़ारी शरीफ़

● कुछ लोग उंगलियों को क़िब्ले के ख़िलाफ़ की तरफ़ मोड़ कर पांव की पुश्त को ज़मीन पर रखते हैं, यह बहुत ग़लत है,

● कुछ तो सज्दे की हालत में पांवों को उठाए रखते हैं।, ज़मीन पर नहीं रखते, अगर पूरा सज्दा इसी तरह किया तो नमाज़ नहीं होगी। ख़ूब ख़्याल से सुन्नत के मुताबिक़ सज्दा करना चाहिए।

● एक सुन्नत यह भी है कि पांव की दोनों एड़ियों को मिला लिया जाए। —सहीह इब्ने खुज़ैमा भाग 1, पृ० 328, अस्सुनन, भाग 3, पृ० 32

इसका तरीक़ा यह होगा कि दोनों पांव क़रीब कर लिए जाएं और टख़ने और एड़ियां मिला ली जाएं, दोनों पांव सीधे खड़े हों, उंगलियां क़िब्ले की तरफ़ हों।

● दोनों सज्दों में भी रुकूअ की तरह तीन बार 'सुब-हा-न रब्बियल आला' पढ़ना सुन्नत है। —शामी

ज़्यादा मर्तबा भी पढ़ सकते हैं, इससे कम न करें।

दोनों सज्दों के दर्मियान और क़ादे में बैठने का तरीक़ा

● दोनों सज्दों के दर्मियान इत्मीनान करने की ताकीद गुज़र चुकी है। इसका ख़्याल रखें, जलसे की दुआ भी पढ़ें, इससे इत्मीनान भी अच्छी तरह हो सकेगा।

● बायां पावं बिछा कर उस पर बैठें और दहिना पांव खड़ा करके उंगलियों को क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जह रखें। —बुख़ारी, शामी

● कुछ लोग दोनों एड़ियां खड़ी करके उस पर बैठ जाते हैं। कुछ लोग दोनों पांव एक दूसरे पर रख कर उस पर बैठते हैं, यह सब सुन्नत के ख़िलाफ़ है।

● पहले क़ादा और आख़िरी क़ादा में भी बैठने का मस्नून तरीक़ा वही है, जो दोनों सज्दों के दर्मियान है, इस मौक़े पर भी बहुत से लोग ग़लती करते हैं।

● क़ादा में दोनों सज्दों के दर्मियान हाथों के रखने का मशहूर तरीक़ा यह है कि दोनों हाथ रानों पर इस तरह रखे जाएं कि उंगलियां घुटने की तरफ़ लटकी हुई न हों, बल्कि क़िबले की तरफ़ मुतवज्जह हों, यानी उंगलियों के आखिरी सिरे घुटनों के शुरूआती किनारों तक पहुंच जाएं। —शामी

लेकिन मुस्लिम शरीफ़ की एह हदीस में अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु से यह रिवायत है कि हज़रत ﷺ अपने घुटने को बाएं हाथ का लुक़्मा बनाते थे, इसलिए कुछ उलेमा यह फ़रमाते हैं कि बाएं हाथ की उंगलियों को घुटनों पर लटकाएं। —मुस्लिम शीरफ़, भाग 1, पृ० 216, मय शरह नववी

इमाम तहावी का यही मज़हब है।

● दाहिने हाथ को भी शुरू में रान पर या घुटने पर रख लेंगे और अत्तहीयात पढ़ेंगे। जब अशहदु पर पहुंचेंगे तो बीच की उंगली और अंगूठे को मिला कर हलक़ा बना लेंगे और छोटी उंगली और उसके बाद वाली उंगली को बन्द कर लेंगे और शहादत की उंगली से क़िब्ले की तरफ़ उठा कर इशारा करेंगे। 'अश्हदुअल्ला' पर उठाएंगे और 'इल्लल्लाह' पर गिरा देंगे। बाक़ी उंगलियों को आखिर तक इसी तरह बाक़ी रखेंगे।

—रफ़-अ़त-त रद्दुद फी अक़्दिल असाबिअ इन्दत-तशहहुद लिइब्नि आबिदीन शामी

शहादत की उंगली को आसमान की तरफ़ नहीं उठाएंगे, सिर्फ़ क़िब्ले की तरफ़ उठाएंगे —मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी

सलाम और दुआ की तस्हीह

● सलाम फेरते वक़्त दोनों तरफ़ इतनी गरदन मोड़ें कि पीछे के लोगों को रुख़्सार नज़र आ जाएं। —बुख़ारी व मुस्लिम

● दाहिनी तरफ़ सलाम फेर कर चेहरा क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जह करें, फिर बाईं तरफ़ सलाम फेरें। कुछ लोग दाहिनी तरफ़ चेहरा रखते हुए ही

सलाम की शुरूआत करते हैं और बाईं तरफ़ लाते हैं, यह ठीक नहीं।

—मौलाना अबरारुल हक़ साहब हरदोई मद्द ज़िल्लहू

● दोनों तरफ़ सलाम करते हुए उस तरफ़ के इंसानों और फ़रिश्तों को सलाम करने की नीयत करें। —शामी

● दुआ के वक़्त दोनों हाथ इतने उठाएं कि वे सीने के सामने आ जाएं। दोनों हाथों के दर्मियान थोड़ा सा फ़ासला हो, दोनों हाथों को बिल्कुल मिलाएं नहीं, न एक दूसरे पर रखें, न मुंह पर रखें।

—आलमगीरी, भाग 5, पृ० 318

लिबास की इस्लाह

नमाज़ में सतर औरत तो शर्त ही है, सतर औरत के बाद भी कुछ चीज़ों की रियायत ज़रूरी है। मर्दों का कपड़ा रेशमी न हो, जानदार की तस्वीर वाला न हो, कुरता-पाजमा या लुंगी या पेंट टख़ने से नीचे नहीं होना चाहिए। कोई कपड़ा अगर टख़नों से नीचे हुआ तो नमाज़ मकरूह होगी।

एक बार एक सहाबी ने नमाज़ पढ़ी। उनका पाजामा या लुंगी टख़ने से नीचे थी। हज़रत ﷺ ने उनको नमाज़ और वुज़ू दोनों को लौटाने का हुक्म दिया। पूछा गया, हज़रत! आपने वुज़ू लौटाने का क्यों हुक्म दिया? फ़रमाया, उसने लुंगी नीची करके नमाज़ पढ़ी और जो ऐसा करता है, उसकी नमाज़ क़ुबूल नहीं होती। —अबूदाऊद, मिश्कात, पृ० 73

मालूम होता है कि वुज़ू लौटाने का हुक्म सज़ा के तौर पर दिया, ताकि फिर ऐसी ग़लती न करें। नमाज़ के लौटाने का हुक्म तो ज़ाहिर है कि इसलिए दिया कि ऐसी नमाज़ मकरूह होती है। अल्लाह के दरबार में क़ुबूल नहीं होती।

और यह मज़्मून तो बहुत सी हदीसों में आया है कि जो तकब्बुर के तौर पर इज़ार नीचे करता है, यानी लुंगी या पाजामा टख़ने से नीचे करता है, अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसकी तरफ़ (नाराज़ी की वजह से रहमत की नज़र से नहीं देखेंगे।) —मिश्कात शरीफ़, पृ० 373

कुछ लोग कह देते हैं कि हम तकब्बुर की वजह से नहीं करते और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के वाक़िए से दलील लाते हैं जिसका बुख़ारी शरीफ़ में किताबुल अदब में ज़िक्र किया गया है। यह बहुत बड़ा

धोखा है। अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह फ़रमाया था कि मेरी लुंगी ढीली हो जाती है, जब मैं उसका ख़्याल नहीं करता, तो हज़रत ﷺ ने फ़रमाया, तुम उन लोगों में से नहीं हो जो अपनी लुंगी नीची करते हैं (जानबूझ कर) यानी बेख़्याली में नीचे हो जाना और बात है और जान-बूझ कर करना और बात है। पाजामा और पेंट लम्बा सिलवाना और टख़ने से नीचे करके पहनना तो जान-बूझ कर ही होता है। इस पर हज़रत अबूबक्र ؓ के वाक़िए का हवाला देना नफ़्स की बहुत बड़ी चाल है। तकब्बुर ऐसी बीमारी है जो आदमी को महसूस नहीं होती और सूफ़िया किराम फ़रमाते हैं, बहुत मुश्किल से जाती है, इसके लिए बुज़ुर्गों की जूतियां सीधी करनी पड़ती हैं। (अबूबक्र ؓ दुबले-पतले आदमी थे, बैठ कर उठते रहे हों, उस वक़्त ढीली और नीची हो जाती रही होगी, इसके बारे में उन्होंने पूछा था, जान-बूझ कर नहीं करते थे।)

अगर मान भी लिया जाए कि तकब्बुर की वजह से नहीं करते तो कम-से कम तकब्बुर करने वालों के साथ मुशाबहत तो पाई जाती है, यही क्या कम है। हदीस शरीफ़ में तो यह आता है 'मा तशब्ब-ह बिक़ौमिन फ़-हु-व मिनहुम'

—अबूदाऊद पृ० 551

क्या तकब्बुर करने वालों के काम से मिलता-जुलता काम होना अच्छी बात है? सच तो यह है कि यह अमल तकब्बुर की वजह से होता है। आदमी को इस बीमारी का एहसास नहीं होता। एक हदीस में आया है, एक सहाबी से आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया—

'ईया-क व इस्बालुल इज़ारि फ़इन्नहा मिनल मख़ीला व इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल मख़ीला।' —मिकाश, पृ० 158

यानी लुंगी नीची करने से परहेज़ करो, इसलिए कि यह तकब्बुर की वजह से है। और अल्लाह तआला तकब्बुर को पसन्द नहीं करते और एक हदीस में है—

'मा असफ़लुमिनल काबैन फ़ु-हु-व फ़िन्नारि' (मिश्कात, पृ० 373, बुख़ारी शरीफ़) यानी जो कपड़ा टख़ने से नीचे है, वह जहन्नम में जाएगा। कपड़ा तो दुनिया ही में उतार दिया जाता है। मतलब यह है कि कपड़े वाला जहन्नम में जाएगा। हदीस शरीफ़ में आया है—

'जिसके दिल में ज़रा भी किब्र होगा, वह जन्नत में नहीं जा सकता' (तिर्मिज़ी शरीफ़, भाग 2, पृ० 20) इसकी तरफ़ बड़ी तवज्जोह की ज़रूरत है। इसमें आमतौर से ग़फ़लत की जाती है। इससे मना किया गया है। नमाज़ के

अन्दर भी और बाहर भी। जब यह हालत अल्लाह तआला को पसन्द नहीं, तो ऐसी हालत में नमाज़ कैसे क़ुबूल होगी? बहुत से ऐसे लोग देखे जाते हैं कि नमाज़ के वक़्त तो पाजामा या पेंट मोड़ लेते हैं, फिर जब नमाज़ से फ़ारिग़ होते हैं तो नीचे कर लेते हैं या काम करने के वक़्त टख़ने से नीचे रखते है। ऐसे लोगों को मालूम होना चाहिए कि यह तरीक़ा अल्लाह तआला को हर वक़्त नापसन्द है, फिर हम नमाज़ के बाहर भी अल्लाह तआला की नाराज़ी क्यों मोल लें? इसी हाल में मौत आ जाए तो क्या होगा? अल्लाहुम्महफ़िज़ना मिन्हु।

खुले सर या आधी आस्तीन के साथ नमाज़ पढ़ना

नमाज़ की हालत में शरीअत के हुक्म के मुताबिक़ ज़ीनत मत्लूब है अल्लाह तआला का इर्शाद है-

'ऐ आदम की औलाद! हर नमाज़ के वक़्त अपनी ज़ीनत को अख़्तियार करो।'

—आराफ़ 31

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब लिखते हैं कि इस आयते करीमा से यह समझ में आता है कि नमाज़ के वक़्त सिर्फ़ सतर छिपाना ही मक़्सूद नहीं, बल्कि ज़ीनत का अख़्तियार करना भी मक़्सूद है, इसलिए मर्द का नंगे सर नमाज़ पढ़ना या मूंढे या कुहनियो को खोल कर नमाज़ पढ़ना मकरूह है, चाहे क़मीज़ ही आधी आस्तीन हो या आस्तीन चढ़ाई गई हो, बहरहाल नमाज़ मकरूह है। इसी तरह ऐसे लिबास में भी पढ़ना मकरूह है, जिसको पहनकर आदमी अपने दोस्तों और अवाम के सामने जाने में शर्म महसूस करे, जैसे सिर्फ़ बनियान, बग़ैर कुरते के, अगरचे पूरी आस्तीन भी हो।

सर, मोढ़े और कोहनियों को खोल कर नमाज़ का मकरूह होना क़ुरआनी आयत के लफ़्ज़ 'ज़ीनत' से भी समझा जा सकता है और रसूले करीम के लफ़्ज़ों से भी।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, भाग 3, पृ० 544

हसन बसरी रह० नमाज़ के वक़्त अपना सबसे बेहतर लिबास पहनते थे और फ़रमाते थे कि अल्लाह तआला जमाल को पसन्द फ़रमाते हैं, फिर ताईद के तौर पर इस आयत को तिलावत फ़रमाते थे।

या बनी आदम! ख़ुज़ू ज़ीनतकुम इन-द कुल्लि मस्जिद

(ऐ आदम की औलाद! हर नमाज़ के वक़्त अपनी ज़ीनत अख़्तियार करो।)

—दुर्रे मुख़्तार, भाग 1, पृ० 599

चुस्त लिबास में नमाज़ पढ़ना

ऐसा चुस्त लिबास पहनना, जिससे शर्मगाह की शक्ल और बनावट नुमायां होती हो, बिल्कुल सतरे औरत के हुक्म के ख़िलाफ़ है, इसलिए ज़ाहिर है कि ऐसे कपड़े में नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए, बल्कि ऐसे कपड़े में किसी के सामने भी नहीं आना चाहिए। —अहसनुल फ़तावा, भाग 3, पृ० 403

तस्वीर वाले कपड़े में नमाज़ पढ़ना

ऐसे कपड़े में नमाज़ पढ़ना जिस पर जानदार की तस्वीर बनी हो, मकरूह है। —शामी, भाग 1, पृ० 606

नक़्श व निगार वाले कपड़े

ऐसे कपड़े पहन कर नमाज़ पढ़ना भी मकरूह है, जिसपर निगाह को अपनी तरफ़ खींचने वाले नक़्श व निगार (बेल-बूटे) बने हुए हों, इसकी वजह यह है कि नमाज़ी की खुद या किसी दूसरे मुसल्ली की उस पर निगाह पड़ेगी और उसके देखने में मश्ग़ूल होने की वजह से अल्लाह तआला की तरफ़ से तवज्जोह हट जाएगी जो ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के ख़िलाफ़ है।

एक बार एक सहाबी ने आंहज़रत ﷺ को एक नक़्शदार चादर तोहफ़े में दी। आप ने उसमें नमाज़ पढ़ी। नमाज़ से फ़ारिग़ होते ही उसको निकाल दिया और फ़रमाया कि क़रीब था कि मुझे ग़ाफ़िल कर देती, उसको अबू जह्म ؓ को वापस कर दो (जिन्होंने दी थी) और उनकी अनजबानी चादर (जो सादा थी) लाओ। —बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात, पृ० 72

इससे मालूम हुआ कि जो चीज़ कपड़ा या मुसल्ला ऐसा नज़र में चुभे जो नमाज़ी की तवज्जोह को हटा दे, उसको इस्तेमाल करना नमाज़ की हालत में मुनासिब नहीं है, बल्कि मकरूह है। —शामी, भाग 1, पृ० 593

कांट-छांट की इस्लाह

अल्लाह तआला अपने बन्दों को ऐसी शक्ल व सूरत में देखना चाहते हैं जो उनको पसन्द है। अगर दाढ़ी मुंडी हुई हो, कतरी हुई हो जिसकी वजह से एक मुट्ठी से कम हो गई हो या मूंछें बहुत बढ़ी हुई हों कि बाल होंठों पर आ गए हों, तो अल्लाह ऐसे बन्दे की तरफ़ किस तरह तवज्जोह फ़रमाएंगे?

एक बार आंहज़रत ﷺ ने नागवारी ज़ाहिर फ़रमाई और उनको देखना पसन्द नहीं फ़रमाया। इस क़िस्से को हज़रत शेख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया रह० ने अपनी किताब 'दाढ़ी के वजूब' में बयान फ़रमाया है। जब अल्लाह के रसूल ﷺ को यह सूरत पसन्द नहीं तो अल्लाह तआला को कैसे पसन्द होगी और नमाज़ तो अल्लाह तआला की रहमत को अपनी तरफ़ मुतवज्जह करने ही के लिए है। ऐसी नागवार शक्ल के साथ अल्लाह की रहमत किस तरह मुतवज्जह होगी?

ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़

आज हम लोगों की नमाज़ में सबसे ज़्यादा कमी ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ की है। हालांकि फ़लाह और कामियाबी का वायदा उसी के लिए है जो नमाज़ में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ करे। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं—

क़द अफ़ लहल मोमिनू-न ल्लज़ी-न हुम फ़ी सलातिहिम खाशिअ़ून (अल-मोमिनून) (कामियाब हैं वे ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूअ़ करें।)

ख़ुशूअ़ पैदा करने का तरीक़ा यह है कि अपनी हर नमाज़ को आख़िरी नमाज़ समझें। नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया, 'सल्लि सला-त मुवद्दिअिन' (मिश्कात पृ० 445) (रुख़्सत होने वाले की नमाज़ पढ़ो।)

यह सोचो कि मालूम नहीं इसके बाद ज़िन्दगी में नमाज़ पढ़ने का मौक़ा मिले या नहीं? यह सोचकर रब्बे ज़ुल जलाल के सामने खड़ा हो गया और कहा, उसे मेरे दिल व दिमाग़ के ख़्यालों का भी इल्म है। वह दिलों की बात भी जाननेवाला है, अगर मैं उसकी तरफ़ दिल से मुतवज्जह न हूंगा तो उसकी तवज्जोह मुझे किस तरह हासिल हो सकती है; मैं उसका मुहताज हूं।, वह मेरा मुहताज नहीं।

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० लिखते हैं, ख़ुशूअ़ सुकून का नाम है, नमाज़ में आज़ा का सुकून भी मत्लूब है और वह यह है कि इरादे से हाथ-पाँव बेकार न फैलाए, इधर-उधर गरदन या नज़र को न घुमाए, सर को ऊपर न उठाए, बालों को बार-बार न संवारे, बे-ज़रूरत बदन न खुजाए, न खंखारे 'नह-व ज़ालिक'

दिल का ख़ुशूअ़ यह है कि इरादे से किसी बात को न सोचे। अगर ख़ुद ख़्याल आ जाए तो यह ख़ुशूअ़ के मनाफ़ी नहीं। मालूम हुआ कि ख़ुशूअ़ अख़्तियारी काम है, आदत के हिसाब से नामुम्किन नहीं है, हां, इरादे व तवज्जोह की ज़रूरत है।

खुशूअ़ हासिल करने का आसान तरीक़ा यह है कि नमाज़ में जो मुंह से निकले, सिर्फ़ याद से न निकले, बल्कि हर-हर लफ़्ज़ पर मुस्तक़िल इरादा करके उसको मुंह से निकाले। जब हर लफ़्ज़ पर ख़ास तवज्जोह रहेगी, तो लाज़िमी तौर पर दूसरे ख़्याल बन्द हो जाएंगे। इस मुराक़बे को शुरू से आखिर तक लाज़िमी तौर पर करे, एक तो इनशाअल्लाह कोई ख़्याल नहीं आएगा, अगर मान लो, आ जाए तो फिर इस सोच में न पड़े कि अरे! यह तो फिर ख़तरे आने लगे, यह सोच भी दूसरे की सोच है बल्कि उसी ज़िक्र किए गए तरीक़े को दोबारा ज़िंदा करे, इनशाअल्लाह ख़तरे दूर हो जाएंगे।

—इस्लाहे इंक़िलाब से, पृ० 114

अगर खुशूअ़ व खुज़ूअ़ नमाज़ में न पैदा हो, तो भी नमाज़ नहीं छोड़नी चाहिए। खुशूअ़ की कोशिश करनी चाहिए, अगर छोड़ दी तो फ़र्ज़ का ज़िम्मा सर पर रहेगा, शैतान हर तरह गुमराह करना चाहता है। कभी यही समझाता है कि तुम्हारी नमाज़ ही क्या, ऐसी नमाज़ न पढ़ने में कोई हरज नहीं, हाशा व कल्ला, नमाज़ हर हाल में पढ़ना फ़र्ज़ है, चाहे दिल लगे या न लगे, खुशूअ़ व खुज़ूअ़ हो या न हो, हां कोताही हो जाए, इधर-उधर ज़ेहन मुंतक़िल हो जाए तो तौबा और इस्तग़फ़ार करे और अच्छा पढ़ने का इरादा करे, इनशाअल्लाह इस्लाह होती जाएगी।

घरवालों को नमाज़ पढ़वाने की फ़िक्र

खुद नमाज़ का एहतिमाम करने के साथ अपने से मुताल्लिक बीवी-बच्चों, भाई-बहन, पड़ोसी, ताल्लुक़ रखने वाले रिश्तेदार, इन तमाम को नमाज़ का आदी बनाने की फ़िक्र करे, कोशिश करे, उसके बारे में बात करे तर्ग़ीब से, इस्लाम ने पूरी उम्मत, बल्कि पूरी इंसानियत की ज़िम्मेदारी हर उम्मती पर डाली है, खुद आंहज़रत ﷺ को अल्लाह तआला ने हुक्म दिया—

"وامر اهلك بالصلاة واصطبر عليها"

'अपने अह्ल को नमाज़ का हुक्म दीजिए और खुद उस पर जमे रहिए।'

इसी तरह अल्लाह का इर्शाद है

"يا يها الذين آمنوا قوا انفسكم واهليكم نارا"

'ऐ ईमानवालो! खुद को और अपने मुताल्लिक़ लोगों को जहन्नम की आग से बचाओ, इसलिए हर मुसलमान को इस ज़िम्मेदारी का एहसास होना चाहिऐ।

كلكم راع و كلكم مسئول عن رعيته (بخاری صفحه ۱۰۵۷)

'तुममें हर एक निगहबान और मुहाफ़िज़ (हिफ़ाज़त करनेवाला) है और हर एक से उसकी रियाया (प्रजा) के बारे में सवाल होगा'

अल्लाह तआला पूरी उम्मत को ख़ासतौर से हमको इस ज़िम्मेदारी के एहसास की तौफ़ीक़ दे।

اللهم اهدنا فيمن هديت وعافنا فيمن عافيت وتولنا فيمن توليت وبارك لنا فيما اعطيت وصلى الله على النبى الكريم و آله واصحابه اجمعين والحمد لله اولا وآخرا۔

'अल्लाहुम्महि्दना फ़ीमन हदैत व आफ़िना फ़ीमन आफ़ैत व तवल्लना फ़ीमन तवल्लैत व बारिक लना फ़ीमा आतैत व सल्लल्लाहु अलन्नबीयिल करीम व आलिही व अस्हाबिही अजमईन, वल हम्दुलिल्लाहि अव्वलन व आख़िरन।'

(हज़रत मौलाना) फ़ज़लुर्रहमान आज़मी (साहब)
(शेखुल हदीस) दारुल उलूम आज़ादोल, जुनूबी अफ़्रीक़ा
21 रजब 1411 हि० मुताबिक़ 7 फ़रवरी 1991

औरतों की नमाज़

1. औरतों की नमाज़ मर्दों से कुछ जगहों पर ज़रा मुख़्तलिफ़ (अलग) है, इसलिए उनकी नमाज़ का तरीक़ा लिखा जाता है और इस्लाह व तस्हीह की तरफ़ तवज्जोह दिलाई जाती है।

औरतों को नमाज़ शुरू करने से पहले इस बात का इत्मीनान कर लेना चाहिए कि उनके चेहरे और हाथ-पांव के सिवा तमाम जिस्म कपड़े से ढका हुआ है।

कुछ औरतें इस तरह नमाज़ पढ़ती हैं कि उनके बाल खुले होते हैं। कुछ के कान, कुछ की कलाइयां खुली होती हैं, कुछ के दुपट्टे इतने बारीक होते हैं कि बाल नज़र आते हैं, ये सब तरीक़े नाजायज़ हैं।

नमाज़ के दौरान औरत का कोई उज़्व (अंग), चेहरा, हाथ और पांव के सिवा अगर इतनी देर खुला रहा, जिसमें तीन बार 'सुब-हा-न रब्बियल अज़ीम' पढ़ा जा सके तो नमाज़ ही नहीं होगी और अगर उससे कम खुला रहा तो नमाज़ तो हो जाएगी, मगर मकरूह होगी और गुनाह होगा।

2. औरतें जितना घर के अन्दर नमाज़ पढ़ें, उतना बेहतर है। कमरे में नमाज़ पढ़ना, बरामदे में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है और बरामदे में नमाज़ पढ़ना सेहन में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है।

3. औरतों को नमाज़ शुरू करते वक़्त हाथ कानों तक नहीं, बल्कि सिर्फ़ कंधों तक उठाना चाहिए और वह भी दोपट्टे के अन्दर, हाथ बाहर न निकालें।

—बहिश्ती ज़ेवर

4. औरतें हाथ सिर्फ़ सीने पर इस तरह बांधें कि दाएं हाथ की हथेली बाएं हाथ की पीठ पर रख दें। उंगलियां ख़ूब मिली हुई हों। (औरतों को दाहिने हाथ से बाएं हाथ की कलाई को पकड़ना नहीं है, यह मर्दों का तरीक़ा है।

—तहतावी अलल मराक़ी, पृ० 141

5. औरतें इस तरह खड़ी हों कि दोनों पांव मिले हुए हों, पांव के दर्मियान फ़ासला न हो, रुकूअ में भी यही हालत रहनी चाहिए।

—मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी मद्द ज़िल्लहू, बहिश्ती ज़ेवर

6. नमाज़ की नीयत करके अल्लाहु अकबर कह कर हाथों को सीनों पर रखने के बाद दुआए सना पढ़ें। फिर 'अऊज़ु बिल्लाह' और 'बिस्मिल्लाह' कह कर 'अलहम्दु' शरीफ पढ़ें, 'वलज़्ज़ाल्लीन' के बाद आमीन कहें, फिर 'बिस्मिल्लाह' पढ़ कर सूरा पढ़ें, फिर 'अल्लाहु अकबर' कह कर रूकूअ में जाएं।

7. औरत रूकूअ में सिर्फ़ इतनी झुके कि हाथों को घुटने पर रख दे। (मर्दों की तरह कमर और पीठ के बराबर नहीं करना है, यानी मर्दों से कम झुकना है) दोनों हाथ की उंगलियां मिला कर घुटनों पर रख दें, उंगलियां फैली हुई न हों।

—तहतावी, पृ० 141, बहिश्ती ज़ेवर

8. दोनों पहलू बाज़ू से ख़ूब मिलाए रहें और दोनों पैर के टख़ने मिलाए रखें।

—तहतावी व बहिश्ती ज़ेवर

9. औरतों को रूकूअ में अपने पांव बिल्कुल सीधे न रखने चाहिएं, बल्कि घुटनों को आगे की तरफ़ ज़रा सा ख़म देकर खड़ा होना चाहिए।

—शामी, मुफ़्ती तक़ी उस्मानी

10. रूकूअ में तीन बार या पांच बार 'सुब-हा-न रब्बियल अज़ीम' पढ़े और 'समिअल्लाहु लिमन हमिदह' कह कर सर उठाए और इत्मीनान से खड़ी हो और 'रब्बाना लकल हम्दु हम्दन कसीरन तैयिबम-मुबारकन फ़ीहि' पढ़े या यह पढ़े 'रब्बना लकल हम्दु म-ल-अस्सतावाति वल अर्ज़ि व म-ल-अ मा बैनहुमा व मल-अ मा शे-त मिन शैइन बाद,'

—बुख़ारी व मुस्लिम

11. औरतों को सज्दा इस तरह करना चाहिए कि पेट रानों से बिल्कुल मिल जाए और बाज़ू भी पहलू से मिले हुए हों, दोनों बाहें ज़मीन पर बिछा दें।

—बहिश्ती ज़ेवर

12. दोनों हाथों के बीच में सर रखे, नाक और पेशानी दोनों रखे, हाथ की उंगलियां बन्द हों और क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जह हों, अंगूठा भी क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जह हो।

13. दोनों पांव दाहिनी तरफ़ को निकाल दे, खड़ा न रखे, अलबत्ता उंगलियां क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जह हों और तीन या पांच बार 'सुब-हा-न रब्बियल आला' पढ़े।

14. फिर 'अल्लाहु अकबर' कर कर उठे और इत्मीनान से बैठे, बाएं सुरीन को ज़मीन पर रख दे, दोनों पांव दाहिनी तरफ़ से निकाल दे और दाएं रान से बाएं रान पर रख दे और दाईं पिंडुली बाईं पिंडुली पर।

—तहतावी अलल मराक़ी अल-फ़लाह, पृ० 146 व बहिश्ती ज़ेवर

15.दोनों हाथ अपनी रानों पर रख दें और उंगलियां खूब मिला कर रखें। औरतों के लिए यही तरीक़ा है कि रुकूअ, सज्दा, दो सज्दों के दर्मियान और क़ादों में उंगलियां बन्द रखें, इनमें फ़ासला न हो (जबकि मर्दों के लिए हुक्म यह है कि रूकूअ़ में उंगलियां खोल कर रखें, सज्दे में बन्द रखें और बाक़ी हरकतों में अपनी हालत पर रखें, न बन्द, न खुली, बल्कि बैन-बैन)

16. दो सज्दों के दर्मियान जलसे में यह दुआ भी पढ़े—

'अल्लाहु म्मग़्फ़िरली वर्हमनी व आफ़िनी व ह्दिनी वर्ज़ुक़नी' आंहज़रत ﷺ यह दुआ पढ़ते थे। —तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, हाकिम

फ़र्ज़ नफ़्ल हर नमाज़ में पढ़ें।

17. फिर 'अल्लाहु अबकर' कह कर दूसरा सज्दा करे, इसमें भी पहले सज्दे की तरह करे, फिर 'अल्लाहु अकबर' कह कर खड़ी हो जाए, ज़मीन पर हाथ टेक कर न उठे, फिर 'बिस्मिल्लाह' पढ़ कर सूरः फ़ातिहा पढ़े। सूरः फ़ातिहा के ख़त्म पर पहली रक्अत की तरह आमीन कहे और बिस्मिल्लाह पढ़ कर सूरः पढ़े। —बहिश्तीज़ेवर

18. दो रक्अत पूरी होने पर क़ादा करे, इसमें बैठने का वही तरीक़ा है जो दोनों सज्दों के दर्मियान बताया गया और हर क़ादे में वही तरीक़ा है, क़ादे में अत्तहीयात पढ़े, जब 'अश्हदु अल्लाइलाह' पर पहुंचे तो दाहिने हाथ की छोटी उंगली और उससे मिली हुई उंगली बन्द करे (इसको अक़्द कहते हैं) और बीच में उंगली और अंगूठे का हलक़ा बना ले और शहादत की उंगली उठा कर अल्लाह तआला को एक होने का इशारा करे और 'इल्लल्लाह' पर गिरा दे, लेकिन अक़्द व हलक़ा को आख़िर तक बाक़ी रखे।

19. अगर दो रक्अत वाली नमाज़ है तो सलाम तक यही शक्ल बनाए रखे, दरूद शरीफ़ और मासूरा दुआ पढ़ कर सलाम फेरे और अगर तीन या चार रक्अत वाली नमाज़ है तो 'अत्तहीयात' पढ़ कर फ़ौरन उठ जाए।

20. तीसरी और चौथी रक्अत में भी सूरः फ़ातिहा से पहले 'बिस्मिल्लाह' पढ़े, फ़र्ज़ नमाज़ हो तो सूरः फ़ातिहा के बाद रुकूअ करे। वित्र, सुन्नत और नफ़्ल में 'बिस्मिल्लाह' पढ़ कर सूरः भी पढ़े।

21. क़ादा अख़ीरा (जिस में सलाम फेरना है) में इस तरह सलाम फेरे कि 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि' कहते हुए मुंह दाएं तरफ़ फेरे, क़िबले की तरफ़ से शुरू करे और 'अस्सलामुअलैकुम व रहमतुल्लाहि' कहते हुए बाईं

तरफ़ सलाम कहते हुए फ़रिश्तों को सलाम करने की नीयत करे। बाएं तरफ़ सलाम फेरने की शुरूआत मुंह को क़िबला की तरफ़ करने के बाद करेंगे, दाएं तरफ़ से नहीं।

औरतों के लिए जमाअत करना मकरूह है, उनको अकेली नमाज़ पढ़नी चाहिए, अलबत्ता अगर घर के महरम लोग घर में जमाअत कर रहे हों तो उनके साथ जमाअत में शरीक हो जाने में कोई हरज नहीं, लेकिन ऐसे में मर्दों के बिल्कुल पीछे खड़ा होना ज़रूरी है। बराबर में हरगिज़ न खड़ी हों।

औरतों को चाहिए कि पांचों वक़्त की नमाज़ और तरावीह नमाज़ अकेले पढ़ें। उनके लिए जमाअत करना मकरूहे तहरीमी है।

—फ़तावा रहीमिया, भाग 1, पृ० 347, दुर्रेमुख़्तार व शामी भाग 1, पृ० 418

—(हज़रत मौलाना) फ़ज़्लुर्रहमान आज़मी (साहब)
(शेख़ुल हदीस) दारुल उलूम आज़ादोल साउथ अफ़्रीक़ा
रज़ब 1420 हि०, मुताबिक़ अक्तूबर 1999 ई.)
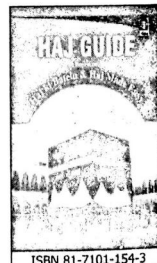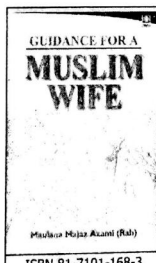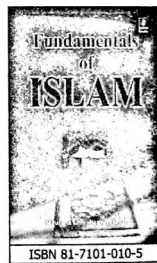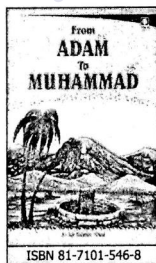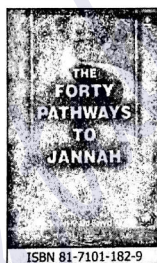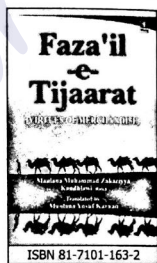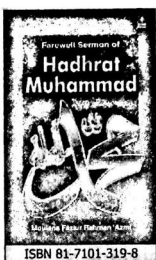
हदीस शरीफ़ में आता है कि एक दौर ऐसा आने वाला हैं कि इस्लाम और इस्लामी आमाल की सिर्फ़ शक्लें बाक़ी रह जायेंगी और वह बस एक रस्म की तरह अदा किये जाने लगेंगे, आज ठीक वही हाल हमारे सामने है। बहुत से लोग तो नमाज़ के पाबन्द ही नहीं हैं जो मुसलमान होते हुए बड़ा संगीन गुनाह है, लेकिन जो लोग नमाज़ के पाबन्द हैं वह भी इसे एक रस्म और चली चलाई आदत के तौर पर पूरा करते हैं।

आज सख़्त ज़रुरत इस बात की है कि हम अपनी नमाज़ को इंतिहाई पाबन्दी से ठीक वक़्त पर जमाअत के साथ अदा करें और इसी के साथ-साथ नमाज़ के एक-एक अमल, एक-एक दुआ, सूरत और तस्बीह को इस नज़र से देखें कि इसमें कोई कमी कोताही तो नहीं हो रही है?........ अगर कोई कमी महसूस हो तो बहुत ध्यान से इसकी इस्लाह करें।

यह किताब मुसलमानों को इसी ज़रुरत का एहसास दिलाने के लिए लिखी गई है।